

# Webinar on “Natural Dye from Forest Biomass”

VEER ARJUN  
25-7-2020

## फोरेस्ट बायोमास से नेचुरल डाई पर वेबिनार का हुआ आयोजन

वीर अर्जुन संवाददाता  
देहरादून, । वन अनुसंधान संस्थान के रसायन एवं जैव पूर्वविक्षण प्रभाग द्वारा फोरेस्ट बायोमास से नेचुरल डाई विषयक एक वेबिनार का आयोजन भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, (आईसीएफआरई) देहरादून के बोर्ड रूम में किया गया। इस वेबिनार में प्रमुख शैक्षणिक एवं वैज्ञानिक संस्थानों के विशिष्ट वैज्ञानिक, शिक्षाविद, एफआरआई के अनुभवी वैज्ञानिक, गैर सरकारी संगठनों, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, राज्य रेशम बोर्ड और उद्योगों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि के रूप में वेबिनार का उद्घाटन करते हुए डॉ अरुण सिंह रावत, महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद ने बायो इकोनोमी के युग में बायोमास उपयोग के महत्व को रेखांकित किया। डॉ रावत ने बताया



वेबिनार में प्रतिभाग करते हुए।

कि इस वेबिनार का आयोजन भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के दिशा निर्देशों के अनुपालन में किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य वन बायोमास का नेचुरल डाई के उत्पादन उपयोग हेतु अनुसंधान आवश्यकताओं का पता

लगाना है ताकि वर्तमान जरूरतों के अनुसार अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रमों को समन्वित किया जा सके। वेबिनार का उद्देश्य शोधकर्ताओं और हितधारकों, उद्यमियों और अन्य लाभार्थी समूह के बीच एक प्रभावी और रणनीतिक संबंध स्थापित करने

के लिए उनके बिचारों और आकांक्षाओं को साझा करने के लिए मंच प्रदान करना है। प्रारम्भ में डॉ. विनीत कुमार, प्रमुख, रसायन एवं जैव पूर्वविक्षण प्रभाग ने प्रतिनिधियों और सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और वेबिनार के उद्देश्यों एवं विभिन्न

कार्यक्रमों कि रूपरेखा के बारे में जानकारी दी। इसके साथ ही डॉ विनीत ने प्रभाग द्वारा अबतक नेचुरल डाई एवं अन्य सभी अनुसन्धानों का एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। डॉ प्रवीन उनीवाल ने फोरेस्ट बायोमास से नेचुरल डाई प्राप्त करने के संदर्भ में किए गए अनुसंधानों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। इसके उपरांत डॉ वैसी सेसिल, सलाहकार (हैण्डलूम), हाफ्ट एनुकेशन एवं रिसर्च सेंटर, चेन्नई ने ओल्डनलैण्डिया अंबलेटरू प्राचीन कालीन लाल रंग विषय पर अपना व्याख्यान दिया। अशोक धोरो, सलाहकार (नेचुरल डाई) ने औषधीय एवं प्राकृतिक रंग हेतु फोरेस्ट बायोमास के सतत उपयोग विषय पर प्रकाश डाला। तदोपरांत प्राकृतिक रंगों के औद्योगिक परिप्रेक्ष्य पर रचित जैन, एस0ए0एम0 वेबिनेटवल्स कलर लि0, मुरादाबाद

द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। गैर सरकारी संस्था अक्वी, पिथौरागढ़ से रश्मि भारती ने उत्तराखण्ड राज्य में प्राकृतिक रंगों के उत्पादन को प्रोत्साहन देते हुए सतत आजीविका एवं चांथ अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने की आवश्यकता पर बल दिया। आई0एफ0जी0टी0वी0, कोयंबटूर के डॉ एन0 सैथिल कुमार ने लाल ईमली से प्राकृतिक रंगों की प्राप्ति की संभावना पर प्रकाश डाला। तदोपरांत डॉ एस0 एन0 चट्टोपाध्याय, एन0आई0एन0एफ0ई0टी0, कोलकाता द्वारा प्राकृतिक रंगों का प्रयोग कर लिगनोसेल्यूलोजिक फाईबर की कार्यात्मक गुणवत्ता में सुधार विषय पर व्याख्यान दिया। यावर अली शाह, ए0एम0ए0 हर्बल्स, लखनऊ ने अपने व्याख्यान में वस्त्रों की प्राकृतिक रंगाई हेतु रणनीतिक सततता विषय पर बल दिया।

Dainik Jagran  
25 July, 2020

## वेबिनार में नेचुरल डाई संबंधी अनुसंधान साझा

देहरादून : वन अनुसंधान संस्थान में 'फॉरेस्ट बायोमास से नेचुरल डाई तैयार करना' विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया। शुक्रवार को वेबिनार का उद्घाटन करते हुए एफआरआई के निदेशक एएस रावत ने कहा कि फॉरेस्ट बायोमास में नेचुरल डाई तैयार करने की असीम संभावनाएं छिपी हैं। इस दिशा में अधिक से अधिक शोध कर बाजार में क्रांतिकारी बदलाव लाए जा सकते हैं। वहीं, रसायन प्रभाग के प्रमुख डॉ. विनीत कुमार ने नेचुरल डाई तैयार करने की दिशा में किए गए शोध कार्यों को साझा किया। डॉ. प्रवीन उनियाल व डॉ. बैसी सेसिल ने भी प्राचीनकाल से लेकर अब तक प्राकृतिक डाई तैयार करने को लेकर किए गए प्रयासों से रूबरू कराया। (जासं)

SHAH TIMES

25-7-2020

# वन अनुसंधान संस्थान में राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन

● फॉरेस्ट बायोमास से नेचुरल डाई रहा वेबीनार का विषय ● वैज्ञानिकों शिक्षाविदों एनजीओ और उद्योगों के प्रतिनिधियों सहित देश के कोने कोने से कई विभागों के विशेषज्ञों ने दिए व्याख्यान

शाह टाइम्स संवाददाता देहरादून। वन अनुसंधान संस्थान के रसायन एवं जैव पूर्वक्षण प्रभाग ने फॉरेस्ट बायोमास से नेचुरल डाई विषयक एक वेबिनार का भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, आईसीएफआई के बोर्ड रूम में किया गया।

इस वेबिनार में प्रमुख शैक्षणिक एवं वैज्ञानिक संस्थानों के विशिष्ट वैज्ञानिक, शिक्षाविद, एफआईआई के अनुभवी वैज्ञानिक, गैर सरकारी संगठनों, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, राज्य रेशम बोर्ड और उद्योगों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि के रूप में वेबिनार का उद्घाटन करते हुए डॉ अरुण सिंह रावत महानिदेशक भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद ने बायो इकोनोमी के

युग में बायोमास उपयोग के महत्व को रेखांकित किया। डॉ. रावत ने बताया कि इस वेबिनार का आयोजन भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून के दिशा निर्देशों के अनुपालन में किया जा रहा है। जिसका उद्देश्य वन बायोमास का नेचुरल डाई के उत्पादन उपयोग के लिए अनुसंधान आवश्यकताओं का पता लगाना है ताकि वर्तमान जरूरतों के अनुसार अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रमों को समर्पित किया जा सके।

प्रारम्भ में डॉ. विनीत कुमार प्रमुख रसायन एवं जैव पूर्वक्षण प्रभाग ने प्रतिनिधियों और सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और वेबिनार के उद्देश्यों एवं विभिन्न कार्यक्रमों कि रूपरेखा के बारे में जानकारी दी।



इसके साथ ही डॉ विनीत ने प्रभाग द्वारा अब तक नेचुरल डाई एवं अन्य सभी अनुसंधानों का एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। डॉ प्रवीन उनियाल ने फॉरेस्ट बायोमास से नेचुरल डाई प्राप्त करने के संदर्भ में किए गए अनुसंधानों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। इसके बाद डॉ बैसी सिसिल, सलाहकार (हैण्डलूम), क्राफ्ट एजुकेशन एवं रिसर्च सेंटर, चेन्नई ने ओल्डनलेण्डिया अबलेटरू प्राचीन कालीन लाल रंग विषय पर अपना व्याख्यान दिया। अशोक थोरी, सलाहकार (नेचुरल डाई) ने औषधीय एवं प्राकृतिक रंग के लिए

फॉरेस्ट बायोमास के सतत उपयोग विषय पर प्रकाश डाला। प्राकृतिक रंगों के औद्योगिक परिप्रेक्ष्य पर रचित जैन, एसएएम वेंजिटेबल्स कलर लि, मुगदाबाद ने व्याख्यान प्रस्तुत किया। गैर सरकारी संस्था अवनी, पिथौरागढ़ से रश्मि भारती ने उत्तराखण्ड राज्य में प्राकृतिक रंगों के उत्पादन को प्रोत्साहन देते हुए सतत आजीविका एवं चक्रीय अर्धव्यवस्था को सुदृढ़ करने की आवश्यकता पर बल दिया। आईएफजीटीबी कोयंबटूर के डॉ. एन. संधिल कुमार ने लाल ईमली से प्राकृतिक रंगों की प्राप्ति की संभावना पर प्रकाश डाला। डॉ. एसएन चट्टा. पाध्याय, एनआईएनएफईटी, कोलक.

ता ने प्राकृतिक रंगों का प्रयोग कर लिंगनोसेल्यूलोजिक फाईबर की कार्यात्मक गुणवत्ता में सुधार विषय पर व्याख्यान दिया। यावर अली शाह, एएमए हर्बल्स, लखनऊ ने अपने व्याख्यान में वर्कों की प्राकृतिक रंगाई के लिए रणनीतिक सततता विषय पर बल दिया। इसके बाद अनिल चंदोला, भारतीय ग्रामोत्थान संस्थान, ऋषिकेश ने विभिन्न रंगों के प्राकृतिक फाईबर के संयोग से विभिन्न रंगों के वर्कों को तैयार करने की संभावना पर प्रकाश डाला तथा इस विधि से उत्पादित कई वर्क प्रदर्शित भी किए।

व्याख्यानों की समाप्ति के बाद पैनल चर्चा हुई। इस सत्र के दौरान नेचुरल डाई के क्षेत्र में गुणवत्ता सुधार एवं आजीविका की संभावना पर भी विस्तृत चर्चा हुई। इस वेबिनार के





## FRI Organizes Webinar On 'Natural Dye From Forest Biomass'



**Dehradun:** A Webinar on "Natural Dye from Forest Biomass" was organized by the Chemistry and Bioprospecting Division of Forest Research Institute (FRI), Dehradun on 24th July, 2020 in the Board Room of Indian Council of Forestry Research Education (ICFRE). The webinar was attended by representatives from academia, research, NGO, Industries KVICS, Central Silk Boards, State Silk Board and other stakeholder groups. Inaugurating the Webinar, Dr. A.S. Rawat, Director General, ICFRE and Chief Guest of the occasion underlined the importance of commercial utilization of plentifully

available forest biomass in the era of bioeconomy. He highlighted that this Webinar is in tune with the initiatives of ICFRE aiming to identify the gaps and develop usable approaches / strategies for advantageous utilization of forest biomass in general and as natural dye in particular.

Dr. Vineet Kumar, Scientist-G, Chemistry and Bioprospecting Division, FRI welcomed the Chief Guest and delegates and presented a brief account of the intent and focus of the webinar. Afterwards a glimpse of research and accomplishments of Chemistry and Bioprospecting Division, FRI in the area of natural

dye was presented by Dr. P.K. Onial. Thereafter Dr. Bessie Cecil, Consultant CERC, Chennai delivered his talk on "Oldenlandia umbellata: Red-dye of the Old World" and Mr. Ashok Thori, a natural dye consultant talked about "Utilization of forest biomass in natural dyes production". Mr. Rachit Jain from SAM Vegetables Colours Ltd., Moradabad spoke about industrial perspective of natural dyes and Ms. Rashmi Bharti from Avni, Pithoragarh about creating sustainable livelihood and a circular economy for rural women through collection and cultivation of Natural dyes in Uttarakhand. Dr. N. Senthil Kumar, IFGTB, Coimbatore underlined the use of Red Tamarind as a source of natural dyes and Dr. S.N. Chattopadhyaya from NINFET, Kolkata talk about colouration of lignocelluloses fiber and improvement of functional properties using natural dyes. Mr. Yavar Ali Shah from AMA Herbals, Lucknow spoke on sustainable approach for textile dyeing and Mr. Anil

Chandola from Bhartiya Gramothan Sanstha, Rishikesh, Uttarakhand talked about blending of natural dyes with natural fibers.

After the presentations, a panel discussion was held in which Dr. Y.C. Tripathi, Dr. V.K. Varshney, Dr. A.K. Pandey, Dr. Pradeep Sharma, Senior Scientists of Chemistry and Bioprospecting Division, FRI, Dr. Rakesh Kumar, IWST Bengaluru, Dr. D. Thangamani, IFGTB, Coimbatore, Shri Molfa, KVIB, Uttarakhand, Dr. Kartick Samanta, NINFET, Kolkata, Prof. K Kumaran, TNAU, Coimbatore and all delegates virtually present at the web platform deliberated on opportunity, challenges, research needs and various other relevant aspects concerning utilization forest biomass as a source of natural dye so as to capitalize on their true economic potential in rural livelihood and entrepreneurial development.

The Webinar was ended with vote of thanks proposed by Dr. Y.C. Tripathi.